

२०८. हेमन्तफल (Fragaria Chiloensis or Physalis Alkekengi)

Fam. Rosaceae सं.-हेमन्तफल, राजपुत्रिका, सूक्ष्मकंट, हरितलता, सूक्ष्मबीज, काकनज, कलांकितफल, स्वादुफल, सरसफल, रक्तफल, मृदुफल, मुखरंजन, शोभन, रक्तांग, सुवास। हिं.- रसीला, अनुराग, सुफल, रक्तफल, स्ट्रावेरी, स्ट्रावेरी, विलायती टमाटर, शोभालता, एयूटन, खूनीफल। अ.-काकंज। फा.-कचूमन, अरुसकपास-इ-परदा। अं.-Strabery Tometo। अन्य भारतीय भाषाओं में इसे स्ट्रावेरी नाम से ही जाना जाता है। अन्य भारतीय भाषाओं में इसे स्ट्रावेरी नाम से ही जाना जाता है।

प्राप्ति स्थान-यह जापान से दक्षिण-पूर्वी यूरोप तक फैले देशों का वंशज है। यह पहाड़ी क्षेत्रों की फसल है। इसकी

खेती पंजाब काश्मीर, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तामिलनाडु तथा कर्नाटक में की जाती है। अन्य प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में यह गुणहीन पाया गया है। कुछ लोग इसे शोभा के लिये उद्यानों में लगाते हैं। - यह बह वर्षायु क्षुप है जो झाड़ी या लता के सदृश भूमि पर पसर जाता है। इसकी पत्तियाँ मोटी, कठित आभा लिये गहरी हरी और चमकीली होती हैं। पत्तियों का पृष्ठ भाग पीली आभा लिये होता है। पुष्प श्वेत रंग

के फल विविध आकृतियों में होते हैं। फलों का रंग सिंदूरी या लाल सुर्ख होता है। इसके फल सुवासित होते और भोजन के बाद खाने से मुख खुशबूदार हो जाता है। फल मीठा और रसीला होता है। इसकी पत्तियों की साग स्वादिष्ट तथा गुणकारी होती है।

सके फलों में आर्द्रता, प्रोटीन, खनिज, कार्बोहाइड्रेट, कैल्सियम, फास्फोरस, लौह. बिटामिन ए. और र मोडनिक अम्ल तांबा, थाइमिन, राइबोफ्लेबिन पोटेशियम, आर्बुटिन, टेनिन, तेल, सुक्रोज और शर्करा आदि पदार्थ पाये जाते हैं।

गण-शीतवीर्य। पाचक, भूख को बढ़ाने वाला, मूत्रवर्धक, जलरेचक, कृमिहर, रक्तवर्धक, बलकारी म मन को प्रसन्न करने वाला, हृदय को बल देने वाला, ज्वरनाशक और मस्तिष्क को तरौताजा रखने वाला है तथा कमि जलोदर, व्रण, वेदना, सोजाक, आमवात, उदरविकार, वृक्कविकार, नेत्ररोग, उष्मा, जीमिचलाना आदि रोगों का नाश कर

प्रयुक्त-फल, पत्र। मात्रा-फल ३०-७० ग्राम, पत्र ६०-१२० ग्राम।

रोपणी-शोभन का क्षुप हल्की दुमट मिट्टी जिसमें बारीक रेत मिली हो या काली भुरसी मिट्टी रेत एवं खाद मिशित इसे लगाया जा सकता है। इस पर जलवायु का प्रभाव पड़ता है जिससे उत्तम या घटिया फल प्राप्त होते हैं। इसके बीजों से तैयार किया गया क्षुप देरी से फलता है इसलिये कलमों द्वारा प्रबर्धन उपयुक्त है, इसे जून-जुलाई या नवम्बर-दिसम्बर में लगाया जाता है।

प्रयोग १. इसके फलों का शर्बत हृदय को ताजगी एवं बल देने वाला होता है। २. इसके फलों के रस से बनाई गई आइस्क्रीम को खाने से मस्तिष्क को ताजगी मिलती है। ३. इसके फल के रस में थोड़ा सा नमक और सौंफ का चूर्ण डालकर खाने से शरीर की दाह शान्त होती है, पाचनक्रिया

सुधरती है तथा अतिसार ठीक होता है। ४. दुबले-पतले व्यक्ति या बीमारी के बाद आयी कमजोरी को दूर करने के लिये इसे भोजन के साथ खाने से शीघ्र लाभ

मिलता है। ५. भोजन के अन्त में इसके सेवन से मुख सुवासित होता है और मन को प्रसन्न रखता है।

६. इसके अधिक सेवन से पेशाब अधिक आती है। ७. इसके पत्रों का रस लगाने से सूखी खुजली ठीक

होती है। ८. इसके फलों के सेवन के पश्चात दूध पीने से रक्त की वृद्धि होती है तथा बल की वृद्धि होती

है। ९. इसके पत्रों का रस कपास को गीला कर बन्द नेत्र के ऊपर रखने से नेत्रों की जलन और रतौंधी

ठाक होता है। १०. खट्टा एवं कड़वा फल शरीर के लिये हानिकारक है। ११. फल के रस की दो बँदे

कान में डालने से कान के अन्दर की फिंसियाँ ठीक हो जाती है तथा कान का बहना हो जाता है।

१२. इसकी जड़ को जल में घिसकर दूषित व्रण पर लेप करने से व्रण ठीक हो जाता है। मधुमेह के रोगी को लगने वाली

चोट को भी यह ठीक करता है। १३. इसके रस के सेवन से और इसके पत्रों के उबाले हये जल से स्नान करने पर आमवात, जलोदर, तथा शोथ ठीक होता

१४. भोजन के साथ इसके फलों को चबाकर खाने से कृमि नष्ट होती है और सोजाक में भी लाभ होता है। १५. इसके पत्ते और फलों को पीसकर दर्द वाले स्थान में बाँधने से दर्द ठीक हो जाता है। १६. फल के रस को रुई से लगाने पर चेहरे की काली छाया हट जाती है। १७. गाँठों पर इसक पत्ते पीसकर बाँधे और सिकाई करें। कुछ दिनों के प्रयोग से गाँठे बैठ जायेंगी। १८. फलों को खाली पेट खाने से मधुमेह नियंत्रित होता है तथा कोलेस्ट्रॉल को घटाने का काम करता है जिससे हृदय सुरक्षित रहता है। १९. हमारे शरीर की आंतरिक गतिविधियों को सुरक्षा प्रदान करता है।